



भारतीय ज्ञान परम्परा एक सदाकाल अभिधारणा

अवनी मुकुन्दय भट्ट

सहायक प्राध्यापक, शिक्षण विभाग (IASE), गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद -०९

“सा विद्या या विमुक्तये” : विद्या वही जो मुक्ति दिलाए। भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान की सर्वोच्च परिभाषा दी गई है। भारतीय ज्ञान अनुसार मन के छह विकार दर्शाए गए हैं : मद (अभिमान/अहंकार), मत्सर (इर्ष्या), मोह, लोभ, क्रोध और आलस्य। यहाँ मुक्ति का अर्थ है, इन छह मानसिक विकारों से मुक्ति। अष्टांग योग इन विकारों से मुक्ति के मार्ग दर्शाता है। 1. यम, 2. नियम, 3. आसन, 4. प्राणायाम, 5. प्रत्याहार, 6. धारणा, 7. ध्यान और 8. समाधि “योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः” यानी मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करना ही योग है। भगवान श्रीकृष्ण भी गीता में एक स्थान पर कहते हैं, ‘योगःकर्मसु कौशलम्’ यानी कर्मों में कुशलता ही योग है। अष्टांग योग वह होता है जोकि चित्त के अज्ञानरूपी प्रवाह को स्थिर कर ज्ञानरूपी प्रवाह के ओर ले जाए। “अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यामा :” अर्थात् यम के भी पाँच अंग होते हैं ; अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। कसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार से कष्ट न पहुँचाना अहिंसा है अर्थात् मन, वाणी और शरीर से कसी प्राणी को कभी किसी प्रकार का किंचित मात्र भी दुःख न देना ‘अहिंसा’ है। परदोष का सर्वथा त्याग भी अहिंसा है।

Key Words: Indian Knowledge System, Ancient Indian Knowledge System, Nididhyasana, Manan, Shravan

“अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः” अहिंसा का आचरण करने से व्यक्ति बैर भाव (क्रोध व अहंकार) से मुक्त हो जाता है। “सत्य प्रतिष्ठायां क्रिया फलाश्रयात्वं” अर्थात् सत्य का आचरण करने से कर्म व उसके फल की स्वीकृति आती है। इस स्वीकृति से मन में स्पष्टता रहेती है व मनकी गतिशीलता विक्सित अवस्थामें रहेती है। “अस्तेय प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्” अस्तेय यानी दुसरे की वस्तु का अपहरण न करना व इच्छा भी न करना अस्तेय है। इससे लोभ दूर होता है। “ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः” अर्थात् ब्रह्मचर्य के पालन से सामर्थ्य प्राप्त होता है। यहाँ ब्रह्मचर्य का अर्थ है किसीभी कार्य या वस्तु का केवल योग्य उपयोग करना।



इससे मोह धीरे धीरे दूर होता है । “अपरिग्रहश्चैर्य जन्मकथान्तासम्बोधः” स्वार्थ के लिए ममता पूर्वक संपत्ति, धन और भोग –सामग्री का संचय करना परिग्रह है । इसका अभाव अपरिग्रह है। इससे मन्युष्य मोह से ऊपर उठता है । “शौच संतोष तपः स्वाध्यायेश्वरप्रण्णीधानानि नियमाः” शौच, संतोष, स्वाध्याय, तप और इश्वर प्राप्ति ही यम है । शौच बाह्य व् आतंरिक शुद्धि की प्रक्रिया है । इसके अंतर्गत मनुष्य को शारीरिक शुद्धि के लिए स्नान, दैहिक क्रिया व् खानपान के नियम का आचरण करना आवश्यक है तो उसके साथ ही मैत्री भाव, सद्भाव से आतंरिक शुद्धिके लिए परिश्रम करना आवश्यक है । संतोष का अर्थ है शारीरिक अवस्था को दुरस्त रखने के लिए आवश्यक वस्तुओं की प्रतीति करना और केवल आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति की चेष्टा करना । जो प्राप्त है इसीमें संतुष्टि अनुभूत करना ही यम है । इसके उपरांत तपश्चर्या भी यम है जिसका अर्थ है लक्ष्मी प्राप्ति के लिए शारीरिक अनुभूतियों से ऊपर उठकर पुरुषार्थ करना । यम का अनुक्रमित अंग है स्वाध्याय अर्थात मोक्ष के लिए मार्गदर्शित करते शास्त्रों का अध्ययन करना व् ज्ञानी पुरुषों के उपदेशों का अध्ययन करना । यम का अन्य अंग “इश्वर प्रणिधान” अर्थात इश्वर केंद्री कर्म करना । जो भी कर्म करें उसे इश्वर के उपलक्ष में करना या कर्म को इश्वर को समर्पित करना । इश्वर प्रणिधान से मनुष्य उसके जीवन के व् अस्तित्व के मूल उद्देश्य को अनुभूत करता है । नियम से मानसिक विकार दूर होते है तो यम से मन व् चित्त नाकारात्मकता से सकारात्मकता की और गतिशील होता है । योग का अन्य अंग है “आसन” । “स्थिरसुखासनाम” अर्थात सुख की अवस्था में स्थिर रहेना आसन है । सदैव सुख की अवस्था में रहेना आसन है । यहाँ शारीरिक सुख व् चित्त के सुख की अवस्था को आसन माना गया है । “तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोगतिविच्छेदः प्राणायामः” अर्थात श्वास का नियंत्रण ही योग है । नियंत्रित श्वास की प्रक्रिया से शरीर स्वस्थ रहेता है और निरोगी रहेता है। प्रत्याहार योग का पाँचवा अंग है । “स्वविषया संप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणाम प्रत्याहारः” अर्थात इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना । सांसारिक व् शारीरिक सुखों से चित्त को ऊपर उठाना । बाह्य विषयों से हटकर अंतर्मुख होना । अष्टांग योग का छठा अंग है “धारणा”। “देश बंधश्चित्तस्य धारणा” अर्थात किसी एक विषय या हेतु को एक चित्त धारण करना । किसी विषय या हेतु को एक चित्त



धारण करने से आंतरिक उत्थान का आरम्भ होता है । इससे चित्त द्रढ़ता से नाभिचक्र, हृदयकमल, मस्तक में स्थित प्रकाश पुंज, नासिका तथा जिह्वा के अग्र भाग में अथवा प्रतिमा जैसे बाह्य स्वरूप में लगाना । योग का सातवाँ अंग है "ध्यान"। "तत्र प्रत्येकतानता ध्यानम्" अर्थात् ध्येय विषय का निरंतर मनन । ध्येय का निरंतर मनन करने से नाभिचक्र में स्थित ज्ञान वृत्ति जाग्रत होती है । अष्टांग योग का आठवा अंग और मोक्ष प्राप्ति का अंतिम चरण है "समाधि" । "समाधि" अर्थात् ध्यान में ध्येय की प्रतीति से लेकर उसके निरंतर मनन से शून्य अवस्था को प्राप्त करना जिसमें चित्त विचार शून्य अवस्था को प्राप्त करता है ।

इस तरह यह आवश्यक है की कोईभी शिक्षा प्राप्त करनेकी प्रक्रिया योग के इन अवस्थाओं को प्राप्त करें । ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक है की मानसिक विकारों से मुक्त होकर चित्त की साकारात्मक अवस्था की और मानसिक गति हो और ध्येय को धारण कर उसके निरंतर मनन से ध्यान की अवस्था से समाधि अवस्था की प्राप्ति करना । वैदिक समयमें शिक्षण के उद्देश्य जीवनकेंद्री होते थे । गुरुकुल प्रथा में शिष्य गुरु के आश्रम में रहेकर शिक्षा प्राप्त करते थे । शिष्यों के आश्रम निवास के दौरान शिष्यों को यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान इत्यादि का पालन करना आवश्यक था । इससे शिष्यों का चरित्र निर्माण होता था । शिष्य मानसिक रूप से ज्ञान प्राप्ति के लिए सज्जता प्राप्त करते थे । मानसिक विकारों से मुक्ति पाते थे । उनका भाव जगत शुद्ध रहे इस हेतु गुरु के आश्रम में नियमानुसार उनका व्यवहार जरूरी होता था । गुरु आज्ञा में रहेने से वे समर्पण भाव, श्रद्धा भाव तथा आदर भाव जैसे सकारात्मक भाव में रहेते थे जो ज्ञान प्राप्ति के आधार है । गुरु को ही सर्वोपरि सत्ता के रूप में स्वीकारने से उनमें सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह जैसे गुणों का विकास स्वाभाविक रूप से होता था । नियम अनुसार जीवन प्रणाली में रहेने से वे इन्द्रियों पर काबू पा सकते थे । इसके उपरांत शिक्षण प्रणाली के अंतर्गत शिष्य श्रवण, मनन, निदिध्यासन और वाद – विवाद का उपयोग होता था । गुरु जो व्याख्यान या कहानी कथन से अध्यापन कराते थे वह शिष्य को श्रवण द्वारा ग्राह्य करना रहेता था । श्रवण का अर्थ है एकाग्र चित्त से हेतु पूर्वक सक्रिय रूप से श्रवण करना । अतः श्रवण एक मानसिक सक्रीय प्रक्रिया थी, जिससे मन सक्रीय रूप से ज्ञानको ग्रहण करता तत्पश्चात



जो श्रवण के द्वारा ग्राह्य है उसे मनन किया जाता था । मनन अर्थात् जो ग्राह्य है उसका चिंतन करना , उसके गुढ़ अर्थ को समझने का प्रयत्न करना तथा जो श्रवण से ग्राह्य है उसके व्यापक अर्थ को समझना मनन है तो जो श्रवण से ग्राह्य है उसके मनन के पश्चात् उसका ध्यान धरना और ज्ञान की अनुभूति करना निदिध्यासन है । जो निदिध्यासन से अनुभूत है उसे वाद -विवाद द्वारा प्रमाणित किया जाता था । अष्टांग योग मोक्ष का जो मार्ग प्रदर्शित करता है, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति गुरुकुल शिक्षा, श्रवण, मनन, निदिध्यासन और वाद -विवाद अष्टांग योग के सोपानों पर आधारित है । यह सोपान अद्वैत वेदांत के अनुसार ज्ञान योग के सोपान है । श्रवण, मनन, निदिध्यासन मानसिक उत्थान की अवस्थाएँ हैं जिससे मानसिक क्षमातामें वृद्धि होती है । शिक्षा की यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के ऊपर आधारित थी जो किसी भी युगमें प्रयोज्य है

References:

1. Amit Jha (2024): Traditional Knowledge System in India
2. Dr. Shashikant Awasthi (2024): Indian Knowledge Systems - A Comprehensive Analysis of Various Contexts
3. <https://vinitarikhblog.wordpress.com>
4. <https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/8271/1/Unit-6.pdf>
5. <https://madhyasth-darshan.info/study-practice/study-method/>